"वृत्ती बदलो....तो सृष्टी बदलेगी"

आज मनुष्य का दृष्टीकोन नकारात्मक और विषय-विकारी हो गया है. फलस्वरूप लोगों को समाज में चारो तरफ व्यर्थ बातों और बुराईयों में रस लेने की आदत पड गयी है. साधन और सुविधा योगी बनकर व्यक्ति आत्म साधना को भूलता जा रहा है और चूंकि इन साधनों को पाने के लिए समाज में एक से बढकर एक अनैतिक और भ्रष्ट तौर तरीके अपनाने की होड मची है, इसलिए चंद सदाचारी और पवित्र विचार के लोगों के मन में भी कौनूहल मचा हुआ है. अधिकांश लोग यही मानने लग गए हैं, कि शायद यह दुनिया हमेशा से काम, क्रोदादि विकारों से ग्रसित रही है, जिसमें भ्रष्टाचार, अपराध आदि सर्वथा होते रहे हैं. और कि जिसमें क्रोध, झुठ, लोग आदि के बिना काम चल ही नहीं सकता.

परन्तु अध्यात्मिक चिंतन और स्वर्णिम युग का इतिहास यह संकेत देता है कि यह सृष्टी सदाकाल से पतित व भ्रष्टाचारी नहीं है. ऐसा समय था, जब पावन और श्रेष्ठाचारी दुनिया थी. परन्तु मानव की वृत्ति और दृष्टी निरंतर भौतिक भोगविलास के कारण पतित और विकारी बनती चली गयी. इस निरंतर परिवर्तन ने धीरे धीरे समूची सृष्टी को ही परिवर्तन कर डाला. अतः हमें यह भी जानना और निश्चय कर लेना चाहिए कि पुनः हम अपनी वृत्ति और दृष्टी को आत्मिक पवित्र और सात्विक बना लेंगे, तो इसके आधार से यह संसार स्वर्ग जाएगा.

वृत्ति का अभिप्राय क्या है ?

प्रत्येक मनुष्य खाली हाड़ और मांस का पिंजड़ा नहीं है, बल्कि उसके अंदर एक चैतन्य अमर और अविनाशी विचारवान सत्ता विराजमान है जिसे आत्मा अथवा अंतर्चेतना कहते हैं. इस आत्मा में ही सोचने की शक्ति मन, निर्णय करने की शक्ति बुद्धी और स्मृतियोंके रूप में संस्कार संचित रहते हैं. आत्मा एक विचारपुंज है और इस विचार की ही विभिन्न अभिव्यक्तियों, स्मृती, अनुभव, चेहरा, प्रतिक्रिया, विचार और निर्णय शक्ति हैं. इन्हें ही सामूहिक रूप से मनुष्य की मनोवृत्ति या दृष्टीकोन कहा जाता है. जैसी वृत्ति होती है, वैसी ही प्रत्येक मानव की दृष्टी बनती है. तदानुसार ही वह चेष्टा, शुभचिंतन, अशुभचिंतन, सदकर्म या कुकर्म करता है.

वातावरण का निर्माण :-

जैसे सुगंधित पुष्प के चारों और सुंगधित सुखदायी और आनंदमय वातावरण बन जाता है, इस सुगंधित अगरबत्ती की खुशबू पल भर में चारों और फैल जाती है, उसी प्रकार मानव मन में उत्पन्न होनेवाले विचार सूक्ष्म प्रकम्पनों और तरंगों के रूप में अदृष्य रूप में चारों ओर के वातावरण में निरंतर अभिसरित होते रहते हैं. यदि विचार शुभ सशक्त और रचनात्मक हैं, वृत्ति पवित्र और सात्विक है तो आस पास का वातावरण भी वैसा ही सशक्त एवं पावन बन जाता है. और हमारी वृत्ति उस वातावरण में रहनेवाले दुसरे लोगों की भी वृत्ति भी वृत्ति और दृष्टी को भी धीरे धीरे बदलने लगती है.

इसके विपरीत आज कलीयुगी संसार में आज चहुंओर अधिकांश मानव निराशावादी विकारी और अशुभ चिंतक ही रहते हैं. और इसलिए दूषित वृत्ति से सम्पूर्ण वातावरण भी दूषित और पतित बन गया है. पुनः इसे परिवर्तन करने के लिए एक-एक आत्मा को अपनी वृत्ति और दृष्टी का परिवर्तन करना होगा. पवित्रता का वृत्त लेना होगा. शुद्ध आहार-विहार और व्यवहार करना होगा. गार्ड - २ की शुभ दृष्टी रखनी होगी. देह को न देख आत्मदर्शन से और और आत्मचिंतन करना होगा. और इस अभ्यास से इस पतित संसार का वातावरण पवित्र और शुद्ध बन जाएगा. पवित्रता ही सुख, शांति और समृद्धि लाएगी.**राजयोग से वृत्ति और सृष्टी का परिवर्तन :-**

मानव जैसा सोचता है, वैसा ही काम करता है तथा वैसा ही वह बन जाता है. इसलिए वर्तमान संगमयुग पर परमात्मा ने राजयोग द्वारा देवत्व प्राप्ति का दर्शन दिया है. इसके लिए स्वयं को आत्मा समज देह से परे होकर गुणों और शक्तियों के सागर परमात्मा को मन बुद्धि के द्वारा याद करना है. परमात्मा की स्मृति से ही हमारे विकर्म और पाप कर्म दग्ध होते हैं. आत्मा की शुद्धी होती है. गुण और शक्तियों का संचार होता है. गुणमयी पवित्र वृत्ति से हमारी कृति अर्थात कर्म सकारात्मक और कल्याणकारी हो जाती है. इस प्रकार विचार, वृत्ति, दृष्टी और कृति के परिवर्तन से आसपास का वातावरण श्रेष्ठ बनने लगता है. और यह वातावरण उसमें रहनेवाले व्यक्तियों का

भी परिवर्तन करता है. व्यक्तियों के परिवर्तन द्वारा समूची सृष्टी का परिवर्तन हो जाता है. दुसरे शब्दों में यूं भी कह सकते हैं कि मानव मात्र के संसार को फिर से नर्क से स्वर्ग बनाना चाहते हैं, दुःखों की दुनिया के सुख-शांति की दुनिया में बदलना चाहत हैं. तो राजयोग के अभ्यास द्वारा वृत्ति व दृष्टी को पावन बनाएं, फिर यह सृष्टी सुखमय स्वर्ग बन जाएगी.

दुनिया में बदलना चाहत हैं. तो राजयोग के अभ्यास द्वारा वृत्ति व दृष्टी को पावन बनाएं, फिर यह सृष्टी सुखमय स्वर्ग बन जाएगी.

राजयोग से वृत्ति और सृष्टी का परिवर्तन :-

मानव जैसा सोचता है, वैसा ही काम करता है तथा वैसा ही वह बन जाता है. इसलिए वर्तमान संगमयुग पर परमात्मा ने राजयोग द्वारा देवत्व प्राप्ति का दर्शन दिया है. इसके लिए स्वयं को आत्मा समज देह से परे होकर गुणों और शक्तियों के सागर परमात्मा को मन बुद्धि के द्वारा याद करना है. परमात्मा की स्मृति से ही हमारे विकर्म और पाप कर्म दग्ध होते हैं. आत्मा की शुद्धी होती है. गुण और शक्तियों का संचार होता है. गुणमयी पवित्र वृत्ति से हमारी कृति अर्थात कर्म सकारात्मक और कल्याणकारी हो जाती है. इस प्रकार विचार, वृत्ति, दृष्टी और कृति के परिवर्तन से आसपास का वातावरण श्रेष्ठ बनने लगता है. और यह वातावरण उसमें रहनेवाले व्यक्तियों का भी परिवर्तन करता है. व्यक्तियों के परिवर्तन द्वारा समूची सृष्टी का परिवर्तन हो जाता है. दुसरे शब्दों में यूं भी कह सकते हैं कि मानव मात्र के संसार को फिर से नर्क से स्वर्ग बनाना चाहते हैं, दुःखों की दुनिया के सुख-शांति की दुनिया में बदलना चाहत हैं. तो राजयोग के अभ्यास द्वारा वृत्ति व दृष्टी को पावन बनाएं, फिर यह सृष्टी सुखमय स्वर्ग बन जाएगी.

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com